११. परिवर्तन

– दुष्यंत कुमार

ये कौन ?
कौन, कैलास शिखर पर अनाहूत आया ?
ये किसका स्वर है जो मेरे निश्चय से टकराया ?
स्तुति करता सामने नहीं आता है
बचता है ।
यह कौन मुझे
सम्मोहित करने को छल रचता है ।
ये सारे संबोधन हैं कितने क्रूर व्यंग्य !
जो करते आए हैं मेरे संग छल सदैव !
तुम दास समझते हो मैं मित्र समझता हूँ
संबोधन और सर्वनामों की सृष्टि रोक,
उत्तर दो मेरे एक प्रश्न का मित्रमान
दक्ष के यज्ञ में आमंत्रित थे सभी देव
था किंतु उपेक्षित मैं
पर तुमने दिया ध्यान ?
देवत्व और आदर्शों का परिधान ओढ़
मैंने क्या पाया ?
(गहरी पीड़ा से)
हर परंपरा के मरने का विष
मुझे मिला,
हर सूत्रपात का
श्रेय ले गए लोग ।

परिचय

जन्म : १९३३, बिजनौर, (उ.प्र.)

मृत्यु : १९७५, भोपाल (म.प्र.)

परिचय : दुष्यंत कुमार एक प्रसिद्ध हिंदी कवि और गजलकार थे। आपने ४२ वर्ष के जीवन में अपार ख्याति अर्जित की । आपने कविता, गीत, गजल के क्षेत्र में भरपूर लेखन किया ।

प्रमुख कृतियाँ : 'एक कंठ विषपायी', 'मसीहा मर गया' (गीतिनाटक) 'आँगन में एक वृक्ष' (उपन्यास) 'मन के कोण' (लघुकथाएँ) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश 'एक कंठ विषपायी' गीतिनाट्य से लिया गया है। यह प्रसंग उस समय का है जब 'सती' ने आत्मदाह कर लिया था । शिव सती के शव को लेकर मंदाकिनी नदी की ओर प्रस्थान करने वाले ही थे कि कुबेर की आवाज सुनकर रुक गए और उन्हें फटकारने लगे । दुष्यंत कुमार जी ने इस प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से समाज में व्याप्त छल, स्वार्थ, असमानता, श्रेय लूटने की कुपरंपरा, महिमा मंडन, धनपतियों के स्वार्थ, सत्ताधारियों की हृदयहीनता पर करारा प्रहार किया है ।

(क्षणभर रुककर)

मैं ऊब चुका हूँ

इस महिमा मंडित छल से,

अब मुझे स्वयं का

वास्तव सत्य पकड़ना है,

जिन आदर्शों ने

मुझे छला है कई बार

मेरा सुख लूटा है

अब उनसे लड़ना है ।

(फटकारते हुए)

बोलो क्यों आए हो ?

क्या और अपेक्षित है ?

कर्तव्य तुम्हारा धन संचय से इतर

और भी है कोई ?

यदि है तो, हे धनपति कुबेर !

यह है कुयोग;

मैं तो समझा था

धन को दृष्टि नहीं होती

भावना शून्य हो जाते हैं धनवान लोग ।

आत्मस्थ बना देती है सत्ता मित्रों को

आचरण बदलते जाते हैं, उनके क्षण-क्षण,

अपनत्व खत्म हो जाता है,

बच रहता है थोड़ा-सा शिष्टाचार

और औपचारिकता

प्रभुता का ऐसा ही होता आकर्षण ।

— ० —

कल्पना पल्लवन

'केवल संपत्ति से नहीं सद्‌गुणों से समृद्‌ध बनना महत्त्वपूर्ण होता है,' इस पर अपने विचार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

विश्वास काँच की तरह होता है, इसे टूटने नहीं देना चाहिए ।

शब्द वाटिका

अनाहूत = बिना बुलाए आए हुए
प्रभुता = प्रभुत्व, श्रेष्ठता
परिधान = वस्त्र
सूत्रपात = प्रारंभ
कुयोग = बुरा अवसर
आत्मस्थ = स्वयं में स्थित

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

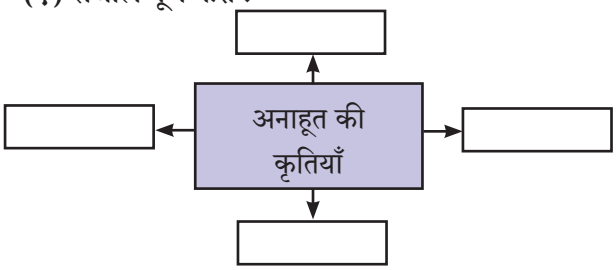

(२) जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ'	उत्तर	'आ'
दक्ष	-------	व्यंग्य
भावना शून्य	-------	यज्ञ
धनपति	-------	धनवान
क्रूर	-------	कुबेर

(३) कृति पूर्ण करो :

१. इनके परिधान ....

२. इनकी सृष्टि रोकनी है ....

(४) सही शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

१. भावना शून्य हो जाते हैं ------- लोग ।
(अमीर/धनवान/मित्र)

२. हर ------- का श्रेय ले गए लोग ।
(कार्य/सूत्रपात/निर्माण)

३. जिन आदर्शों ने मुझे ------- है कई बार ।
(छला/दुख दिया/तोड़ा)

(५) लिखो :

१. निश्चय से टकराने वाला = -------
२. सूत्रपात का श्रेय लेने वाला = -------
३. आत्मस्थ बना देने वाली = -------
४. भावनाशून्य होने वाले = -------

(६) निम्न काव्य पंक्तियों का अर्थ लिखो :

'भावना शून्य हो जाते ------- ।

---------- खत्म हो जाता है',

उपयोजित लेखन

ऐसे प्रसंग का लेखन करो जिससे स्पष्ट हो कि कुसंग का फल बुरा होता है ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

किसी कहानी के मुद्दों का चित्रसहित फोल्डर बनाओ ।

HRV3R4

भाषा बिंदु

१. ने, को, से, में, पर, का/की/के, अरे, के लिए, से/द्‌वारा कारकों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

२. पढ़ो और समझो :

शब्दालंकार

निम्नलिखित शब्दालंकारों को पढ़ो तथा समझो :

१. 'मधुर-मधुर मुस्कान मनोहर, मनुज वेश का उजियाला'

इस पंक्ति में 'म' वर्ण की आवृत्ति है । यहाँ एक वर्ण की आवृत्ति हुई है । यह **अनुप्रास अलंकार** है ।

२. 'जेते तुम **तारे** तेते नभ में न **तारे** हैं ।'

इस पंक्ति में '**तारे**' का अर्थ उद्‌धार किया हैं और दूसरे '**तारे**' का अर्थ सितारे है । तारे शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । यह **यमक अलंकार** है ।

३. मधुबन की छाती को देखो ।
सूखी कितनी इसकी कलियाँ ।

इस पंक्ति में '**कलियाँ**' शब्द से एक से अधिक अर्थ प्राप्त हुए हैं । कलियाँ=फूल का अविकसित रूप,यौवन से पूर्व की अवस्था । यह **श्लेष अलंकार** है ।

अर्थालंकार

निम्नलिखित अर्थालंकारों को पढ़ो और समझो :

१. धूप की उष्मित छुवन से फूल-सी खिलती त्वचा ।

इस पंक्ति में एक वस्तु को दूसरे के समान बताया गया है । त्वचा को फूल के समान खिलती हुई बताया गया है । यह **उपमा अलंकार** है ।

२. राम-नाम मणि-दीप धरि जीह-देहरी द्‌वार ।

इस पंक्ति में राम-नाम, मणि-दीप के समान है, ऐसा बताया गया है । यहाँ एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप किया गया है । यह **रूपक अलंकार** है ।

३. ''लटकनि मनु मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए ।''

उपमेय= लट, उपमान = लट पर मधुप की संभावना व्यक्त की गई है । यहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना की गई है । यहाँ 'मनु' वाचक शब्द है । यह **उत्प्रेक्षा अलंकार** है ।

व्याकरण विभाग (भाषा बिंदु)

शब्द भेद

- **विकारी शब्द**
- **अविकारी शब्द**

(१)

विकारी शब्द के प्रकार

संज्ञा

१. जातिवाचक
२. व्यक्तिवाचक
३. भाववाचक
४. द्रव्यवाचक
५. समूहवाचक

सर्वनाम

१. पुरुषवाचक
२. अ. निश्चयवाचक
   आ. अनिश्चयवाचक
३. निजवाचक
४. प्रश्नवाचक
५. संबंधवाचक

विशेषण

१. जातिवाचक
२. गुणवाचक
३. परिमाणवाचक
   - निश्चित
   - अनिश्चित
४. संख्या वाचक
   - निश्चित
   - अनिश्चित

क्रिया

१. सकर्मक
२. अकर्मक
३. संयुक्त
४. प्रेरणार्थक
५. सहायक

(२)

अविकारी शब्द (अव्यय) के प्रकार

- क्रिया विशेषण अव्यय
- विस्मयादिबोधक अव्यय
- संबंधसूचक अव्यय
- समुच्चयबोधक अव्यय

(३)

संधि के भेद

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(४)

अलंकार के भेद

- **शब्दालंकार**
  - शब्दालंकार के भेद
    - अनुप्रास
    - श्लेष
    - यमक
- **अर्थालंकार**
  - अर्थालंकार के भेद
    - उपमा
    - रूपक
    - उत्प्रेक्षा

(५)

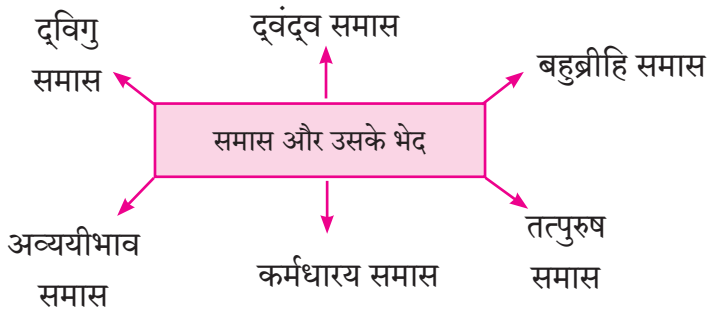

(६) कारक एवं विभक्तियाँ

	कारक	विभक्तियाँ
१.	कर्ता कारक	ने
२.	कर्म कारक	को
३.	करण कारक	से, के द्वारा
४.	संप्रदान कारक	को, के लिए
५.	अपादान कारक	से
६.	संबंध कारक	का–की–के
७.	अधिकरण कारक	में, पर
८.	संबोधन कारक	हे !, अजी !, अहो !, अरे !

कारक : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ व्यक्त होता है, वे कारक हैं ।

विभक्तियाँ : कारक सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, वे विभक्तियाँ हैं ।

(७) काल और उनके प्रकार–उपप्रकार

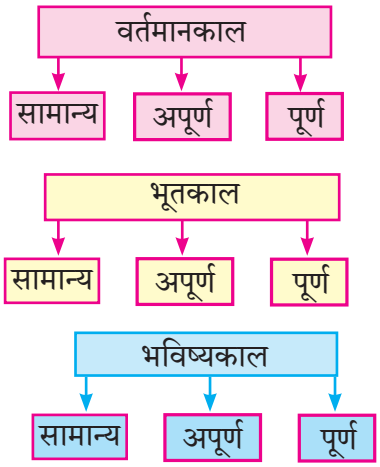

(८) वाक्य के प्रकार

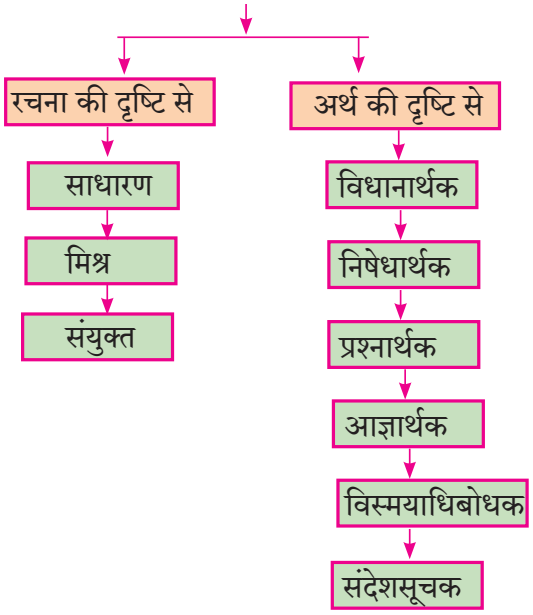

९. विरामचिह्न और उनके प्रकार

१०. शब्द शुद्धीकरण/वाक्य शुद्धीकरण

११. मुहावरे, कहावतें (प्रयोग)

१२. वाक्य के उद्देश्य और विधेय

शब्दसंपदा :– लिंग, वचन, विरुद्धार्थी, समानार्थी, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, मराठी–हिंदी समोच्चारित भिन्नार्थक, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग–प्रत्यययुक्त शब्द, कृदंत, तद्धित ।

वर्ण, वर्ण मेल और वर्ण विच्छेद पढ़ो, समझो और करो :

- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
- इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है ।
- ये व्यंजनों के उच्चारण में सहायता करते हैं ।

- क्, च्, त्, ट्, प्, ...मूल व्यंजन हैं ।
- ये स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते ।
- व्यंजनों में स्वरों को मिलाकर लिखा और बोला जाता है । क्+अ=क, न्+इ=नि, प्+ओ=पो

स्वर

व्यंजन

वर्ण

वह मूल ध्वनि जिसके खंड नहीं होते ।

वर्ण विच्छेद		वर्ण विच्छेद	
मानवीय	म्+आ+न्+अ+व्+ई+य्+अ	वाक्य	----------
सहायता	स्+अ+ह्+आ+य्+अ+त्+आ	शब्द	----------
मृदुल	म्+ऋ+द्+उ+ल्+अ	व्यवहार	----------

वर्ण मेल		वर्ण मेल	
अ+त्+इ+र्+इ+क्+त्+अ	अतिरिक्त	ज्+उ+ई	---------
स्+आ+म्+ऊ+ह्+इ+क्+अ	सामूहिक	प्+ऐ+द्+अ+ल्+अ	---------
ब्+आ+ल्+अ+भ्+आ+र्+अ+त्+ई	बालभारती	श्+औ+न्+अ+क्+अ	---------

ध्यान में रखिए :– क्ष, त्र, श्र और ज्ञ संयुक्त वर्ण हैं :–

क्ष =क्+ष्+अ, त्र=त्+र्+अ, श्र =श्+र्+अ, ज्ञ=ज्+ञ्+अ

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

पत्र लेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आजकल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । संगणक, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल, ई-मेल, वीडियो कॉलिंग जैसी तकनीक को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि के आविष्कार के बाद पत्र लिखने की आवश्यकता कम महसूस होने लगी है फिर भी अपने रिश्तेदार, आत्मीय व्यक्ति, मित्र/सहेली तक अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए पत्र एक सशक्त माध्यम है । पत्रलेखन की कला को आत्मसात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । अपना कहना (माँग/शिकायत/अनुमति/विनती/आवेदन) उचित तथा कम-से-कम शब्दों में संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना, अनुरूप भाषा का प्रयोग करना एक कौशल है । अब तक हम जिस पद्‌धति से पत्रलेखन करते आए हैं, उसमें नई तकनीक के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है।

पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

✻ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक । (पृष्ठ क्र.९, ६९)

औपचारिक पत्र

● प्रति लिखने के बाद पत्र प्राप्तकर्ता का पद और पता लिखना आवश्यक है । ● पत्र के विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक है । ● इसमें महोदय/महोदया शब्द द्‌वारा आदर प्रकट किया जाता है । ● निश्चित तथा सही शब्दों में आशय की प्रस्तुति करना अपेक्षित है । ● पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले का नाम, पता लिखना चाहिए। ● ई-मेल आईडी देना आवश्यक है ।

अनौपचारिक पत्र

● संबोधन तथा अभिवादन रिश्तों के अनुसार, आदर के साथ करना चाहिए । ● प्रारंभ में जिसको पत्र लिखा है उसका कुशलक्षेम पूछना चाहिए । ● लेखन स्नेह, सम्मान सहित, प्रभावी शब्दों और विषय विवेचन के साथ होना चाहिए। ● रिश्ते के अनुसार विषय विवेचन में परिवर्तन अपेक्षित है। ● इस पत्र में विषय उल्लेख आवश्यक नहीं है। ● पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना आवश्यक है ।

टिप्पणी : पत्र लेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजने वाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है । ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है । अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है ।

गद्‌य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

● भाषा सीखकर प्रश्नों की निर्मिति करना एक महत्त्वपूर्ण भाषाई कौशल है । पाठ्‌यक्रम में भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रश्न निर्मिति घटक का समावेश किया गया है । ● दिए गए परिच्छेद (गद्‌यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में हों, ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

✻ प्रश्न ऐसे हों : ● तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हों । ● प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्‌यांश में हों । ● निर्मित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । ● प्रश्न रचना का कौशल प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अभ्यास की आवश्यकता है । ● प्रश्न का उत्तर नहीं लिखना है । ● प्रश्न रचना पूरे गद्‌यांश पर होनी आवश्यक है ।

वृत्तांत लेखन

वृत्तांत का अर्थ है- घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । इसे विषय के अनुसार लिखना पड़ता है। वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है ।

वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें : • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का वर्णन अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • वृत्तांत लेखन लगभग अस्सी शब्दों में हो । समारोह में अध्यक्ष/उद्घाटक/व्याख्याता/वक्ता आदि के जो मौलिक विचार/संदेश व्यक्त हुए हैं, उनका संक्षेप में उल्लेख हो • भाषण में कहे गए वाक्यों को दुहरा '' ..... '' अवतरण चिह्न लगाकर लिखना चाहिए। • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्धति से हो ।

वृत्तांत लेखन के विषय : शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, वाचन प्रेरणा दिवस, शहीद दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, बालिका दिवस, बाल दिवस, दिव्यांग दिवस, वार्षिक पुरस्कार वितरण आदि ।

कहानी लेखन

कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है । इसके पूर्व की कक्षाओं में आपने कहानी लेखन का अभ्यास किया है । कहानी अपनी कल्पना और सृजनशीलता से रची जाती है । कहानी का मूलकथ्य (कथाबीज) उसके प्राण होते हैं । मूल कथ्य के विस्तार के लिए विषय को पात्र, घटना, तर्कसंगत विचारों से परिपोषित करना लेखन कौशल है । इसी लेखन कौशल का विकास करना कहानी लेखन का उद्देश्य है । कहानी लेखन का उद्देश्य मनोरंजन तथा आनंदप्राप्ति भी है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । • कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल, वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद दोहरे अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्द सीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । प्रत्येक मुद्दे या शब्द का अपेक्षित विस्तार आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्ध होनी चाहिए । • कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण निर्मिति होनी चाहिए । उदा. जंगल में कहानी घटती है तो जंगल का रोचक, आकर्षक तथा सही वर्णन अपेक्षित है । • कहानी के मूलकथ्य/विषय (कथाबीज) के अनुसार पात्र व उनके संवाद और भाषा पात्रानुसार, प्रसंगानुकूल होने चाहिए । • प्रत्येक परिसर/क्षेत्र की भाषा एवं भाषा शैली में भिन्नता/विविधता होती है । इसकी जानकारी होनी चाहिए । • अन्य भाषाओं के उद्धरण, सुवचनों आदि के प्रयोग से यथासंभव बचें । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । जहाँ एक विचार, एक घटना समाप्त हो वहाँ परिच्छेद समाप्त करें । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

कहानी लेखन-[शब्द सीमा अस्सी से सौ तक]

कहानी लेखन के प्रकार

(१) शब्दों के आधार पर
(२) मुद्दों के आधार पर
(३) सुवचन/कहावतों के आधार पर

विज्ञापन

वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्त्वपूर्ण अंग है । उत्कृष्ट विज्ञापन पर उत्पाद की बिक्री का आँकड़ा निर्भर करता है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) की क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हों । • विज्ञापन की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो, अतः शब्दरचना, भाषा शुद्ध हो । • जिसका विज्ञापन करना है उसका नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • ग्राहकों की बदलती रुचि, पसंद, आदत, फैशन एवं आवश्यकताओं का प्रतिबिंब विज्ञापन में परिलक्षित होना चाहिए । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण होती है, अतः छूट का उल्लेख करना हर समय आवश्यक नहीं है । • विज्ञापन में संपर्क स्थल का पता, संपर्क (फोन, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी) का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है । • पेन्सिल, स्केच पेन का उपयोग न करें । • चित्र, डिजाइन बनाने की आवश्यकता नहीं है । • विज्ञापन की शब्द मर्यादा पचास से साठ शब्दों तक अपेक्षित है । विज्ञापन में आवश्यक सभी मुद्दों का समावेश हो ।

निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, वस्तु/व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें :

• प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें । • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें । • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो । • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें । • शुद्ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है । • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो । • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्ध होने आवश्यक हैं । • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य विन्यास की ओर ध्यान देना आवश्यक है । • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो । • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो । • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो । निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो । • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो ।

आत्मकथनात्मक निबंध लिखते समय आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातें :

• आत्मकथन अर्थात एक तरह का परकाया प्रवेश है । • किसी वस्तु, प्राणी, पक्षी, व्यक्ति की जगह पर स्वयं को स्थापित/आरोपित करना होता है । • आत्मकथनात्मक लेखन की भाषा प्रथम पुरुष, एकवचन में हो । जैसे - मैं .... बोल रहा/रही हूँ । • प्रारंभ में विषय से संबंधित उचित प्रस्तावना, सुवचन, घटना, प्रसंग संक्षेप में लिख सकते हैं । सीधे 'मैं... हूँ' से भी प्रारंभ किया जा सकता है ।

भावार्थ: पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. पृ. ४७ पाठ ११, पहली इकाई मयूर पंख, जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

प्रस्तुत पद में उद्धव जी के ब्रज में पहुँचने के समय का वर्णन किया गया है ।

श्रीकृष्ण के द्वारा भेजे गए उद्धव जी के ब्रज में पहुँचने का समाचार जैसे ही ब्रजवासियों को मालूम हुआ, रत्नाकर जी कहते हैं कि उसी समय गोपियों के झुंड नंद जी के दरवाजे पर एकत्रित होने लगे । उद्धव जी को श्रीकृष्ण का संदेशवाहक जानकर गोपियाँ आतुर हो जाती हैं । गोपियाँ उद्धव जी को चारों ओर घेरकर खड़ी हैं और उचक-उचककर श्रीकृष्ण के पत्र को देख वे उत्कंठित हो रही हैं । उनका हृदय उमंग से भर गया है । वे सभी जिज्ञासापूर्वक उनसे पूछती हैं कि कृष्ण ने हमको क्या लिखा है ? हमको क्या लिखा है ? इस भाँति सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण द्वारा भेजे गए संदेश जानने को लिए उत्सुक हैं ।

प्रस्तुत पद में उद्धव जी द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर में गोपियों के कथन का वर्णन किया गया है ।

गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव ! तुम ब्रजबालाओं की मति को फेरने की प्रतिज्ञा करके श्रीकृष्ण का दूत बनकर आए हो या योग का ज्ञान देने ब्रह्मदूत बनकर आए हो ।

रत्नाकर जी कहते हैं कि गोपियाँ उद्धव जी से कहती हैं कि तुम प्रीति की रीति नहीं जानते इसलिए अनाड़ियों की नीति अपनाकर हम सबके साथ अन्याय कर रहे हो । गोपियाँ कहती हैं कि तुम नारी हृदय के अनुकूल प्रेम की बातें न करके योग की बातें बताकर अन्याय कर रहे हो । वे कहती हैं कि माना कि कृष्ण और ब्रह्म एक ही हैं, किंतु सच यह है कि हमें आपकी यह भावना रुचिकर नहीं लगती । हम सब अपनी हृदय भावनाओं का हनन कैसे कर सकती हैं? सागर और जल की बूँद में कोई भेद न होता हो किंतु समुद्र में मिलकर बूँद का अस्तित्व तो समाप्त हो जाता है । यदि हम अपनी सत्ता को ब्रह्म में विलीन कर दें तो जल की बूँद की भाँति हमारा अस्तित्व ही नष्ट हो जाएगा । इसलिए हे उद्धव ! आपके ज्ञान और योग द्वारा मुक्ति प्राप्त करने की अपेक्षा कृष्ण का सानिध्य ही हम श्रेयस्कर समझती हैं ।

प्रस्तुत पद में उद्धव जी के ब्रज से विदा होने का वर्णन किया गया है ।

उद्धव जी को विदा करने के लिए गोपियाँ दुख से भरी हुई और अपनी साँसों को सँभाल पाने में असमर्थ इधर-उधर से दौड़ पड़ीं । उनका हृदय वेदना से भरा हुआ है । रत्नाकर जी कहते हैं कि कृष्ण के लिए कोई मोरपंख लिए खड़ी हुई थीं, कोई उमड़ते प्रेम आँसुओं के साथ अँजुरी में घुँघचियाँ (गुंज) लिए खड़ी थीं, कोई भाव विह्वल होकर मीठा और रुचिकर सजावटयुक्त दही लिए हुई थी तथा कोई अपनी धड़कती पसलियों को दबाए, सुंदर छाछ (मट्ठा) लाई थीं । नंद जी ने अपने लाड़ले पुत्र के लिए पीतांबर, माँ यशोदा ने ताजा मक्खन तथा राधा ने उपहार में कृष्ण के लिए सुरीली बाँसुरी दी हैं ।

— o —

भावार्थः पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. पृ. ७५ पाठ ७, दूसरी इकाई अनमोल वचन, दादू दयाल

कवि दादू दयाल कहते हैं कि गुरु अपनी सीख पहले मन ही मन कहते हैं फिर आँखों के संकेतों से उसे समझाने का प्रयास करते हैं । शिष्य फिर भी न समझ पाएँ तो फिर वे अपनी सीख वाणी द्वारा समझाते हैं ।

दादू दयाल जी कहते हैं कि दान में ही भलाई निहित है, अतः सभी के द्वारा दान दिया जाना चाहिए । जो हाथ उठाकर दान नहीं देते उनके घर कुछ बच ही नहीं पाता ।

दादू दयाल कहते हैं कि न घर में रहकर कुछ पाया न वन में जाकर कुछ पाया । ना ही मैंने क्लेष करके कुछ पाया । मैंने तो उपदेशों पर चलकर मन ही मन अपने सतगुरु को पा लिया है ।

अपना शरीर ही अपना प्रार्थना स्थल है । कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं । शरीर के भीतर ही अंतर आत्मा से बंदगी और सेवा करें तो सतगुरु भीतर ही दिखाई दे जाता है ।

पक जाने पर फल बेल को तजकर स्वामी के मुँह में समा जाता है । उसी तरह मानव जीवन है जिसे एक बार स्वामी अपना लेता है वह पुनः लौटकर नहीं आता ।

संसार में दो ही रत्न अनमोल हैं । एक तो स्वामी स्वयं और दूजे संत महात्मा । इनका कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता ।

मेरा शत्रु और कोई नहीं मेरा अहंकार ही है जिसे अन्य कोई नहीं मार सकता । मेरे अहंकार को यदि कोई मार सकता है तो वो मैं ही हूँ । परंतु यह मरकर पुनः जीवित हो जाता है ।

जब तक आपमें अपनत्व की भावना है तब तक लोग आपके निकट हैं । जब अपनत्व शेष नहीं बचता तब और लोग भी आपके निकट नहीं बचते वे आपसे दूर चले जाते हैं ।

—— ० ——

इयत्ता ५ वी, ८ वी शिष्यवृत्ती परीक्षा मार्गदर्शिका

- मराठी, इंग्रजी, उर्दू, हिंदी माध्यमामध्ये उपलब्ध
- सरावासाठी विविध प्रश्न प्रकारांचा समावेश
- घटकनिहाय प्रश्नांचा समावेश
- नमुन्यादाखल उदाहरणांचे स्पष्टीकरण

पुस्तक मागणीसाठी www.ebalbharati.in, www.balbharati.in संकेत स्थळावर भेट द्या.

साहित्य पाठ्यपुस्तक मंडळाच्या विभागीय भांडारांमध्ये विक्रीसाठी उपलब्ध आहे.

ebalbharati

विभागीय भांडारे संपर्क क्रमांक : पुणे - ☎ २५६५९४६५, कोल्हापूर- ☎ २४६८५७६, मुंबई (गोरेगाव) - ☎ २८७७१८४२, पनवेल - ☎ २७४६२६४६५, नाशिक - ☎ २३९१५११, औरंगाबाद - ☎ २३३२१७१, नागपूर - ☎ २५४७७१६/२५२३०७८, लातूर - ☎ २२०९३०, अमरावती - ☎ २५३०९६५